उपसंहार

अन्तमें मेरे शोधप्रबन्ध का सार रूपमें निचोड यह है कि हिन्दी का आधुनिक काव्य एक सर्वथा स्वतंत्र मौलिक विधा है । काव्य के मुख्यत: दो भेद है - १] गदय २] पदय । छन्दों बध्द पद पद्यम् छन्द बध्द रचना पदय कहलाती है और छन्दहीन गदय । पदय में छन्द यति गति-लय और गेयता का प्राधान्य होता है । छन्दस का प्रभाव सीधे हृदय और मनपर पडता है जिससे पदय के स्मरण में सहजता आ जाती है ।

कवि मूलत: व्दिवेदीयुगीन कवि है । कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में कुछ विशिष्ट उद्देश्यों को लेकर व्दिवेदी युगमें जो खण्डकाव्य लिखे गये, उनमें कुछ सामान्य प्रवृत्तियाँ उभरकर सामने आयी, जैसे उपदेशात्मकता, आदर्शवादी दृष्टिकोण, नैतिकता, मानवता एवं विश्व बन्धुत्व की भावना, राष्ट्रीयता, इतिवृत्तात्मकता, संबोधनात्मक अभिव्यक्ति, अतीत गौरवगान, वीरपूजा, वर्तमानपर क्षोभ, भाषा, संस्कार, पुनरुत्थान एवं सुधारवादी दृष्टिकोण आदि । व्दिवेदीयुगीन खण्डकाव्योंने भारतीय जनता में पराधीनता से मुक्ति पाने की छटपटाहट पैदा की, उनमें साहस और जोश जगाकर स्वतंत्र होने के लिए उन्हें बडासे बडा त्याग करने को सन्नध्द किया जो न केवल साहित्य वरन् भारतीय इतिहास की एक अत्यन्त महत्त्वपुर्ण घटना है ।

रवीन्द्रनाथ टैगोरने सर्वप्रथम उपेक्षित नारीपात्रों की ओर कवियों और लेखकों का ध्यान खींचा था, तत्पश्चात महावीर प्रसाद व्दिवेदीने "कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता" नामक प्रसिध्द निबन्ध लिखा । मैथिलीशरण गुप्तने इस संकेतपर "साकेत" में राम और सीता को काव्य का नायक न बनाकर उर्मिला को काव्य का वर्ण्य चुना और "साकेत" नाम रखकर साकेत में स्थिर उर्मिला के नेत्रों से बहते आँसुओं और हृदय में उठती हुई भावनाओं का विस्तृत वर्णन किया । फिर भी सन्तोष न हुआ । "यशोधरा" में कविने पुन: राहुल की माता और बुध्द की पत्नी के रूपमें यशोधरा को

देखा और काव्य का मुख्यविषय यशोधरा की उस कसक टीस को बनाया जो बारबार विद्युत की तरह उसके हृदयमें चमक उठती थी ।

प्रथम अध्याय :

मेरे लघुशोध प्रबंध का प्रथम अध्याय मैथिलीशरणगुप्तजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व है ।

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म सन १८८६ में झाँसी के चिरगाँव नामक स्थानपर वैष्णव मतावलम्बी वैश्य परिवार में हुआ था। गुप्तजी की प्राइमरी तक की प्रारम्भिक शिक्षा चिरगाँव में ही हुई । प्राइमरी की शिक्षा के बाद गुप्तजी मेकडानल हाईस्कुल, झाँसी में अंग्रेजी पढने के लिये गये । झाँसी से घर लौटनेपर गुप्तजी स्वाध्यायमें दिल लगाने लगे। हिन्दी और बंगाली से अनूदित हिन्दी उपन्यास पत्र-पत्रिकाँये पढने में उनका बडा शौक था । शृंगारी पदय भी उनको बहुत पसन्द थे । अजमेरी की प्रेरणासे संस्कृत श्लोको को कण्ठस्थ करने की इच्छा हुई । आयुर्वेद की ओर उनका मोह था । पण्डित रामस्वरूप शास्त्रीसे संस्कृत व्याकरण पढा । श्री दुर्गादत्त और पण्डित अयोध्यानाथजी से भी संस्कृत के बृहत्त्रयी ओ लघुत्रयी और अन्य कुछ श्लोक सुने । इस कालमें १९०१ में गुप्तजी को प्रथमबार काव्य स्फुरणा हुई ।

मैथिलीशरण गुप्तजी की मुख्य देन काव्य है । एक साहित्यिक विचारक के रूपमें उनका स्थान अनन्य साधारण है । कवि की काव्यधारा विगत साठ वर्षोंसे बहती आ रही है । मैं उनकी रचनाओंकी प्रस्तुत कर रहा हूँ रंग में भंग, जयद्रथवध, भारत-भारती, पदयप्रबंध, मुसद्दसे हाली, मुसद्दसे कैफी, शकुंतला, तिलोत्तमा, चन्द्रहास, पत्रावली, किसान, दैतालिक, अनघ, स्वदेश संगीत, पंचवटी, हिन्दू, शक्ति, वनवैभव, सैरंध्री, बकसंहार, गुरुकुल, झंकार, विकटभट, साकेत, यशोधरा, व्दापर, सिध्दराज, मंगलघट, नहुष, कुणालगीत, अर्जन और - विसर्जन, विश्ववेदना, काबा और कर्बला, अजित, हिडिम्बा, - अंजलि और अर्घ्य, पृथ्वीपुत्र, जयभारत, युध्द, राजा और प्रजा,

विष्णुप्रिया, भूमिभाग इस संग्रह की अधिकतर गीतो में शोकरस का अच्छा परिपाक हुआ है। गुप्तजीने मुख्यरूपसे संस्कृत बंगला से कुछ रचनाओंका अनुवाद भी किया है। गुप्तजी की गदयरचना पुस्तककार में प्रकाशित नहीं हुई, फिर भी उनकी कवितामयी गदय शैली का आस्वाद काव्यों की भूमिका, नाट्य कृतियों के गदयांश आदिसे ले सकते है।

इस प्रकार प्रथम अध्याय में कवि के व्यक्तित्व और कृतित्व का विवेचन प्रस्तुत किया है।

व्दितीय अध्याय :

व्दितीय अध्यायमें "यशोधरा" काव्य का संक्षिप्त परिचय दिया है। सन १९३१-३२ में "साकेत" का प्रणयन प्रकाशन हुआ। साकेत की रचना के पश्चात सन १९३३ में "यशोधरा" प्रकाश में आयी। यशोधरा काव्य लिखनेकी प्रेरणा गुप्तजी को बोध्दवाद से मिली।

यशोधरा की कथावस्तु इतिहास प्रसिध्द सिध्दार्थ के महाभिनिष्क्रमण से सम्बन्धित है। सोती गोपा एवं शिशु को आधी रात के अवसरपर अकेले छोडकर महलसे निकलकर सिध्दार्थ का भागना और बुध्द बनकर वापस आना कथा का ऐतिहासिक अंश है, और यशोधरा की विरहस्थितिही है। यशोधरा के विरह का मुख्यकारण पति के व्दारा की गई उपेक्षा से उत्पन्न आत्मसन्तोष और आत्मसंताप है। यह कवि गुप्तजी का नवीन प्रयोग ही मानना चाहिए। जो यशोधरा को किंचित परिवर्तन के साथ कुछ आधुनिक रूप देकर प्रस्तुत किया है। यशोधरा की कथावस्तु को कविने वर्गीकृत खण्डो के रूपमें रखा है, जो पात्रों के नाम और महत्त्व को प्रदर्शित करते है, जैसे सिध्दार्थ, यशोधरा, शुध्दोदन, राहुल, महाप्रजावती, नन्द, छन्दक, पात्रोंमें कालक्रमसे

नाम परिवर्तन का संशोधन किया गया है, जैसे सिध्दार्थ आगे चलकर बुध्ददेव, यशोधरा, राहुल जननी के रूपमें आए है । इन वर्गों की कथा भी गीती के रूपमें चलती है, कहीं कहीं काव्यात्मक कथा को नाट्य पदय का रूप भी दिया गया है । नाटक की योजना रखी गयी है ।

तृतीय अध्याय :

मेरे लघुशोध प्रबन्ध के तृतीय अध्याय का शीर्षक - "यशोधरा काव्य में चरित्र चित्रण " है । यशोधरा काव्य में मुख्य और गौण पात्र है। इनमें यशोधरा, सिध्दार्थ, नन्द, महाप्रजावती, राहुल, शुध्दोदन, छन्दक, कन्थक है ।

पात्रों की मनस्थिती की अनुकूलता की दृष्टिसे "यशोधरा" काव्य महत्वपुर्ण है। यशोधरा सिध्दार्थ की पत्नी तथा राहुल की जननी है । उर्मिला की भाँति यशोधरा की मूकवेदना को गुप्तजीने वाणी दे दी है । उसके व्यक्तित्व में कर्तव्यनिष्ठा तथा मातृत्व के विशाल औदार्य का समन्वय कर आँचल में दूध और आँखो में पानी, रखनेवाली भारतीय नारी की गरिमामयी को प्रकट किया गया है। दूसरे प्रमुख पात्र सिध्दार्थ है, किन्तु उन्हें यशोधरा की अपेक्षा कृतिमें कम महत्व प्रदान किया गया है । यशोधरा काव्य में सिध्दार्थ का पतिरूप, वैराग्यन्मुखस्प, विश्वकल्याणाकांक्षी रूप, साधक रूप दिखाया है । सिध्दार्थ के हृदय में जरा, रोगावस्था और मृत्यु कोदेखकर वैराग्यभाव जाग्रत होना. उनका अर्धरात्रि में पत्नी पुत्र को सोते छोडकर गृहत्याग करना, अनवरत साधना के उपरान्त अमृत तत्व की उपलब्धि और इन्ही को गुप्तजीने भी काव्यबध्द किया है । राहुल को कविने "यशोधरा" में प्राय: सिध्दार्थ के बराबर महत्व प्रदान किया है, और वह कभी अपनी अटपटी बातोसे, कभी दार्शनिकों जैसी जिज्ञासाओं से कभी यशोधरा से नाना प्रकार के हठ करके, उसके विरहकाल का अनन्यसाथी सिध्द होता है । शुध्दोदन पुत्र-वियोग से

व्यथित दिखायी देते है । "साकेत" के दशरथ के समान पुत्रवियोग में उनके प्राण नहीं निकले । शुध्दोदनने अपने वज्र हृदयपर उसे सहन किया। जिसप्रकार दशरथ के सभी प्रयत्न राम को वन जाने से रोकने में असफल रहे, उसीप्रकार शुध्दोदन के सभी प्रयत्न सिध्दार्थ को सांसरिक वैभव-विलास में उलझाने में असफल रहे । अन्त में दशरथ के समान उन्हें भी वही दृश्य देखना पडा और अपने प्रयत्नोंपर पश्चाताप करना पडा। परन्तु अंतमें पुत्र मिलन के आनन्द में पुत्रवधू को नहीं भूलते । वियोगिनी यशोधरा का दशा को देखकर शुध्दोदन को हृदय द्रवित हो उठता है। शुध्दोदन गोपा के बिना गौतम को भी अस्वीकृत करने की प्रतिज्ञा करते है । महाप्रजावती वैष्णवधर्मावलम्बी, आस्तिकवादी है । जिसप्रकार "साकेत" महाकाव्य में युगोंसे प्रचलित कैकयी राम की विमाता के अभिशाप का पक्षालन किया है उसी प्रकार "यशोधरा" काव्य में महाप्रजावती सिध्दार्थ की विमाता का उज्ज्वल चरित्र अंकन किया है । वह एक आदर्श माता है, उसे अपना पुत्र नन्द और सौत मायादेवी का पुत्र सिध्दार्थ दोनों समान है । वह समदर्शिनी माँ है। नन्द सिध्दार्थ का भाई है । वह एक आदर्श के रूपमें चित्रित किया गया है । सिध्दार्थ उसके उपर राज्य का भार छोडकर चले गये । इसे वह उनका अत्याचार समझता है । वह तो राज्य सिध्दार्थ का ही समझता है और स्वयं को तपस्या का अधिकार कहता है । छन्दक सिध्दार्थ का सारथी है । वे उसको अपने ले जाकर नगर की सिमा से लौटा देते है ।

चतुर्थ अध्याय :

चतुर्थ अध्याय का शीर्षक "यशोधरा" काव्य की विशेषताएँ है । काव्य की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित प्रकारसे है ।

१] यशोधरा एक खण्डकाव्य : खण्डकाव्य की विशेषताओं के आधार पर यशोधरा एक खण्डकाव्य है यह बताने का प्रयास इसमें किया है ।

२] यशोधरा काव्य में भारतीय संस्कृति : इसमें संस्कृति की परिभाषा गुप्तजी की संस्कृति और यशोधरा काव्यमें भारतीय संस्कृति का परिचय दिया है । भारतीय संस्कृति की सभी परम्परा यशोधरा काव्य में मिलती है ।

३] यशोधरा काव्य में प्रकृतिवर्णन : गुप्तजीने यथातथ्य प्रकृति चित्रण, पृष्ठभूमि के रूपमें, मानवीकरण के रूपमें, बिम्ब-प्रतिबिम्बात्मक , उपदेशात्मक, अलंकारात्मक, रहस्यात्मक, प्रतिकात्मक, दूतिका आदिके रूपमें प्रकृतिवर्णन किया है

४] यशोधरा काव्य में विरहवर्णन : अभिलाषा, चिन्ता, स्मरण, उद्वेग, गुणकथन, प्रलाप, व्याधि, जडता, उन्माद, मृत्यु आदि विरह की दस अवस्था का उहापोह किया है ।

५] यशोधरा काव्य में नारीभावना : इसमें गुप्तजीने नारी की सौम्यता आद्रता एवं महान गुणोंका वर्णन किया है ।

६] यशोधरा काव्य में गीतात्मकता : इसमें गीतिकाव्य का विकास, गीतिकाव्य की विशेषताएँ, यशोधरा के गीत, गीतात्मकता, कथासूत्र को जोडने में गीत असफल, भावों का द्वंद्व, संगीतात्मकता, छायावादी अन्तर्मुखी भावना का वर्णन है ।

७] यशोधरा काव्य में काव्य सौंदर्य : इसमें यशोधरा का चरित्र, यशोधरा के विरह और वात्सल्यता का वर्णन, पतिविषयक रतिवर्णन, भावोंका द्वंद्व इस सिध्दता, भावों की व्यापकता, वात्सल्यचित्रण, और अलंकार का प्रयोग किया है ।

८] यशोधरा काव्य की भाषाशैली : गुप्तजीनें संस्कृत शब्दावली के प्रचुर प्रयोग के साथ साथ ब्रज, अवधी, बुंदेलखडी शब्दोंका यत्र तत्र प्रयोग किया है ।

खडीबोली के कर्कश शब्दों के स्थानपर ब्रजभाषा की मधुरशब्दावली का प्रयोग किया है । भावाभिव्यक्ति के लिए प्रश्नशैली, उपदेशात्मक शैली और नाट्यशैली का आश्रय लीया है ।

२] यशोधरा काव्य का उद्देश्य : इसमें कवि गुप्तजीने यशोधरा के हार्दिक दु:ख की व्यंजना तथा वैष्णव सिध्दांतों की स्थापना के साथ साथ नारी जाति को उसका उचित गौरव प्रदान करना उद्देश्य माना है ।

इसप्रकार, लघुशोधप्रबंध का संक्षिप्त सार मैंने "उपसंहार" नामक शीर्षक अध्याय में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

=0=0=0=